PHILOSOPHY

Hons., Paper-III (Part II)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449951

A. सुखवाद (बेंथम)

→ बेंथम के सुखवाद का आधार मनोवैज्ञानिक सुखवाद है। उनका कहना है - 'प्रकृति ने मनुष्य को सुख और दुःख नामक दो सर्वशक्तिमानी शासकों के अधीन रख दिया है, हमें यह निश्चय करना चाहिये कि हमें क्या करना चाहिये और हम क्या करेंगे'। आगे वे कहते हैं - 'मनुष्य अपने किसी लाभ के बिना अपनी उँगली भी नहीं उठाता'।

→ इस तरह बेंथम मनोवैज्ञानिक आधार पर मानवीय स्वभाव को रखते हुये मानते हैं कि मनुष्य सुख की कामना से ही कोई काम करता है। अतः जो कार्य जितना ज्यादा सुख दे उसी को करना चाहिये, यही उस कार्य के नैतिकता का मापदण्ड है।

→ बेंथम के अनुसार सभी सुखों में केवल परिमाणात्मक भेद ही होता है, गुणात्मक भेद नहीं। सुखों के परिमाण को मापने उन्होंने सात मापदण्ड बताया है जिसे सुखवादी गणना (Hedonistic Calculus) कहते हैं, वे हैं - तीव्रता, व्यापकता, उत्पादकता, शुद्धता, अवधि, निकटता और असंदिग्धता।

इन्हीं मापदण्ड के आधार पर सुख के सर्वोच्चता को मापते हुये उसके हेतु कर्म करना चाहिये।

→ बेंथम स्वार्थवाद को मानते हुये कहते हैं कि व्यक्ति मूलतः स्वार्थी होता है, वह अपने सुख के लिये ही कोई कर्म करता है, किन्तु कुछ बाह्य दबाव भी उसके साथ है इसलिये वह स्वार्थ से परार्थ की ओर अग्रसर होता है। ये बाह्य दबाव या अंकुश (Sanction) हैं - प्राकृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक।

इन बाह्य दबाव के अतिरिक्त एक आन्तरिक दबाव या अंकुश (Internal Sanction) भी है जिसके कारण वह अपने सामाजिक भावना के कारण दूसरों से सहानुभूति एवं उसके सुख-दुःख का ख्याल रखता है।

→ इसी दबाव के कारण व्यक्ति स्वार्थमूलक सुख के बजाय परार्थमूलक सुख को चाहता है।

Scanned with CamScanner

8. सुखवाद (मिल का)

→ मिल के सुखवाद को उपयोगितावाद भी कहा जाता है क्योंकि इनके अनुसार सुख इसलिये महत्त्वपूर्ण (नैतिक दृष्टि से) है क्योंकि यह अधिकतम व्यक्तियों के लिये अधिकतम उपयोगी है।

→ बेंथम के विपरीत मिल यह स्वीकारते हैं कि सुखों में परिमाणात्मक भेद के अतिरिक्त गुणात्मक भेद भी होता है ~~जो उस~~ जिसके कारण ही उसका मूल्य बढ़ जाता है।

→ सुखों में गुणात्मक भेद को अधिक महत्त्व देने के कारण ही वे बौद्धिक सुख को शारीरिक सुख से श्रेयस्कर बतलाते हैं।

→ इस प्रकार मिल ऐसे सुख को कमनीय (desirable) मानते हैं जो अधिकतम व्यक्तियों के लिये अधिकतम उपयोगी हो एवं जो गुणात्मक रूप से भी श्रेष्ठ हो।

(जो कर्म ऐसे सुख की प्राप्ति में सहायक है, वह उचित है तथा जो बाधक है वह अनुचित)

→ सुखों के बीच गुणात्मक श्रेष्ठता का निर्धारण (मिल के अनुसार) अनुभवी निर्णायकों (Competent judges) के माध्यम से करनी चाहिये।

→ अनुभवी निर्णायक ~~वे हैं~~ वैसे व्यक्ति हैं जिनको जीवन के अनुभव ने इस बात के लिये सक्षम बनाया है कि वे न केवल इसके गुणात्मक श्रेष्ठता को बतला सके बल्कि निष्पक्ष ढंग से इन सुखों के बीच गुणात्मक श्रेष्ठता को दर्शा भी सके।

→ अतः किसी आचरण की नैतिकता उसके उपयोगी-अनुपयोगी होने पर निर्भर है। उपयोगी-अनुपयोगी होने का मापदण्ड सर्वाधिक लोगों के लिये सर्वाधिक मात्रा में (गुणात्मक रूप से) सुख की प्राप्ति में सहायक-बाधक ~~होने~~ होना है।

Scanned with CamScanner